श्रीगुरुगीता—अत्यावश्यक स्तोत्र

बाबा मुक्तानन्द द्वारा लिखित

सिद्धयोग पथ पर स्वाध्याय के रूप में गाए जाने वाले विभिन्न स्तोत्रों में से, बाबा मुक्तानन्द ने विशेष तौर पर श्रीगुरुगीता की शक्ति व उससे होने वाले लाभों का गुणगान करते हुए इस स्तोत्र को "अत्यावश्यक स्तोत्र" बताया है। स्वाध्याय सुधा पुस्तक में 'स्वाध्याय योग' नामक अपनी प्रस्तावना में बाबा जी श्रीगुरुगीता के नित्य पाठ से साधक को मिलने वाले अनन्त आशीर्वादों का वर्णन करते हैं।

बाबा जी द्वारा लिखी गई प्रस्तावना में से यहाँ आपके लिए कुछ अनुच्छेद उद्धरित किए गए हैं जिससे आप उन पर मनन कर सकें और श्रीगुरुगीता पाठ के अपने अभ्यास हेतु प्रज्ञान व प्रेरणा पा सकें।

***

मनुष्य को जिसकी उत्कण्ठा है, वह परमोच्च और शाश्वत सुख केवल अन्तर-शुद्धि में ही निहित है। स्वाध्याय एक ऐसी शक्तिवर्धक औषधि है जो अन्तर-सत्ता का पोषण करती है, आध्यात्मिक बल प्रदान करती है और मन व हृदय को शुद्ध कर देती है। जैसे एक व्यक्ति अपने भौतिक शरीर को वस्त्रों और आभूषणों से सजाता है और स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए व्यायाम करता है, वैसे ही, उसे अपने अन्तर-आध्यात्मिक शरीर का भी ध्यान रखना चाहिए, उसके अच्छे गुणों का व सौन्दर्य का विकास करना चाहिए . . .

यदि मुझसे कोई पूछे कि सर्वश्रेष्ठ स्तोत्र कौन-सा है जिसका पाठ गुरुभक्तों के लिए अत्यावश्यक है तो मैं कहूँगा "गुरुगीता"। यह इतना महान, पवित्र है कि अज्ञानी को ज्ञानी, महानिर्धन को धनवान और विद्वान को मुक्त बनाता है। यह शिव का दिव्य गायन है जो मुक्तिदायक है और इस संसार में परमानन्द का अथाह सागर है। इसका विषय परब्रह्म विज्ञान है, आत्मयोग है और यह जीवन को दिव्य प्राण प्रदान करने वाला है। यह एक सुस्वरमय काव्य है। इसके १८२ छन्दोबद्ध श्लोकों में गुरुभक्ति का महत्त्व, गुरु की भूमिका, उनके स्वरूप और उनके अपूर्व गुणों का वर्णन है। यदि कोई गुरु-समर्पित होकर इसका नियमित पाठ करता है तो उसे योग के लक्ष्य की प्राप्ति सहज में हो जाती है—ऋद्धि-सिद्धि, जीवनमुक्ति और आत्मज्ञान।

गुरुगीता में देवी पार्वती, उमा कुमारी, कुण्डलिनी भगवती जो परशिव परमेश्वर की प्रिय अर्धाङ्गिनी हैं, योगियों का परम लक्ष्य हैं, जिनका स्वभाव सर्वव्यापक चेतना और नित्य आनन्द है, वे अपने

परमप्रिय भगवान शिव से गुरुगीता का रहस्य पूछती हैं। शिव उनका समाधान करते हैं कि यह गुरुगीता भुक्ति और मुक्ति दोनों को देने वाली है।

सत्य तो यह है कि केवल वे ही पवित्र और श्रेष्ठ व्यक्ति हैं जो गुरुभक्ति में पूर्ण लीन हैं, जो गुरु को अपना आत्मरूप मानकर उनकी पूजा करते हैं, गुरुगीता के भावार्थ को लिखने में समर्थ हैं। इसके रहस्य को केवल ज्ञानेश्वर महाराज जैसे महान सन्त ही समझ सकते हैं, जिन्होंने अपनी गुरुभक्ति की सामर्थ्य से भैंसे के मुख से वेद पाठ करवाया और पत्थर की दीवार को चलाया, स्वयं गुरुओं के गुरु होते हुए भी पूरा जीवन अपने गुरु के गुण गाते रहे। भक्तरत्न, सन्त एकनाथ भी अपने गुरु की महिमा जीवन भर गाते रहे, कभी थके नहीं। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान स्वयं उनके लिए पानी भरते थे। केवल इस तरह के महान व्यक्ति ही गुरुगीता की महानता का उपर्युक्त वर्णन करने में समर्थ हैं।

यदि मुझसे कोई पूछे कि तुम्हारा जीवन सार्थक कैसे बना तो मैं यही कहूँगा, "मेरे गुरु के नाम से।" उनकी कृपा से ही मैंने सब कुछ अपने अन्दर पा लिया। मेरे गुरु भगवान नित्यानन्द पूर्ण गुरु थे। उनकी यह सिखावनी है कि सभी पवित्र तीर्थों का केन्द्र हृदय है, वहाँ जाओ और वहीं रमण करो। . . . गुरुगीता के पाठ के साथ जो गुरु का स्मरण और पूजा करता है, वह दिव्यता को प्राप्त कर लेता है।

मेरे लिए एकमात्र आश्रय है, गुरुगीता—गुरु की भक्ति। मैं सतत "गुरु ॐ, गुरु ॐ" जपता हूँ। दिन में कई बार गुरुगीता का पठन और श्रवण होता है। गुरु ही मेरा परम-लक्ष्य हैं।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

स्वामी मुक्तानन्द, "स्वाध्याय योग," स्वाध्याय सुधा, [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१६], पृ. १८-२०।